

MAJESTIC RAINBOW GOLD CRYSTAL SHEET WALL CALENDAR

SIZE:28"X40"

Collection : 2021



Introducing Printman's Rainbow Gold Crystal Sheet. Crafted from a special metalized material, this sheet boasts a luxurious Rainbow gold hue. Utilizing advanced 5-color UV offset printing technology, we add metallic effects for a stunning finish. Each sheet is meticulously packed with Gold plastic road and individual boxes for protection.



ॐ आर्यजी श्री गणेश जी की ॐ

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा । माता जाकी पार्वती, पिता महादेव ॥ जय० ॥
 एकदन्त दयावन्त, चार भुजा धारी । मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ॥ जय० ॥
 पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा । लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा ॥ जय० ॥
 अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया । बौद्धन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥ जय० ॥
 सूरश्याम शरण आये सुफल कीजे सेवा । दीनन की लाजराखो शम्भु-सुत वारी ॥ जय० ॥
 कामना को पूरा करो जग बलिहारी । जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा ॥ जय० ॥

AVAILABLE IN :

1402

**28" x 40" (Rainbow Gold Crystal)
(Aarti)**



ॐ आरती श्री गणेश जी की ॐ

ॐ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः निविर्धनं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा। माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा ॥ जय० ॥
 एकदन्त दयावन्त, चार भुजा धारी। मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ॥ जय० ॥
 पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा। लड़्डुअन का भोग लगे, सन्त करे सेवा ॥ जय० ॥
 अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया। बौझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ॥ जय० ॥
 सूरश्याम शरण आये सुफल कीजे सेवा। दीनन की लाजराखो शम्भु-सुत वारी ॥ जय० ॥
 कामना को पूरा करो जग बलिहारी। जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा ॥ जय० ॥

AVAILABLE IN :

1403

**28" x 40" (Rainbow Gold Crystal)
(Aarti)**

शुभ

लाभ



श्री लक्ष्मी वन्दना

आरती श्री लक्ष्मी जी की

महालक्ष्मि नमस्तुभ्य नमस्तुभ्य सुरेश्वरि ।
 हरिश्चिरे नमस्तुभ्य नमस्तुभ्य दयामिनि ॥
 नमस्तेऽस्तु महापाव श्रीपती सुरपुत्रिते ॥
 शंखनकायदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
 नमस्तु मरुदाकन्द कोलासुरभयदुरि ॥
 सर्व पापहर्त्रे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
 सर्वत्र सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंकरि ॥
 सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
 शिद्धिमुक्तिप्रदे देवि भक्तिमुक्तिप्रदायिनि ॥
 नमस्तुते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥

ओम् जप लक्ष्मी माता, मेरा जप लक्ष्मी माता । तुमको निरालिन संकट, हर विघ्न विघात ॥ ओम् ॥
 उषा, रमा, ब्रह्मणी, तुम ही जन्म माता । सर्व-चन्दमा व्यावर्त, नारद ऋषि गाता ॥ ओम् ॥
 दुर्गा रूप निरञ्जनि, सुख रागणि दाता । जो कोई तुमको ध्यायत, ऋद्धि शिद्धि धन पाता ॥ ओम् ॥
 तुम पाताल-मियासिनि, तुम ही शुभ दाता । कर्म-प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि जी ज्ञाता ॥ ओम् ॥
 जित धर मे तुम रहती, तर्हि सब सर्वदुष्ण आता । सब सम्भव हो जाता, मन नहीं धवराता ॥ ओम् ॥
 तुम बिन यज्ञ न होते, यज्ञ न कोई पाता । खान-पान का वेध, सब तुमसे आता ॥ ओम् ॥
 शुभ पुण-पवित्र मुन्दर, क्षीरोदधि जाता । रतन वसुधैव तुम बिन, कोई नहीं पाता ॥ ओम् ॥
 महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जप गाता । उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ ओम् ॥
 जहाँ तक चरण तेरे पहुँचे, घर शुभ हो जाता । मैं सेवक मैया की शुभ दुष्टि चाहता ॥ ओम् ॥

AVAILABLE IN :

1405

28" x 40" (Rainbow Gold Crystal)
 (Aarti)



श्री लक्ष्मी वन्दना

महालक्ष्मि नमस्तुभ्य नमस्तुभ्य सुरेश्वरि ।
 हरिश्चिरे नमस्तुभ्य नमस्तुभ्य दयानिधि ।
 नमस्तोऽस्तु महामाये श्रीदेवी सुरपुजिते ।
 शंखचक्रगदाहस्तैः महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
 नमस्तैः गरुडाकारं कोलासुरभयदुरि ।
 सदैव पापहारे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
 सर्वत्र सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंजनि ।
 सदैव दुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥
 सिद्धिदुष्टिप्रदं देवि भक्तिसमुत्प्लवनिनि ।
 मान्धवने सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ओम् जय लक्ष्मी माता, वषा जय लक्ष्मी माता । तुमको निहादिन सेवत, हर विष्णु विधाता ॥ ओम् ॥
 उमा, रमा, ब्रह्मणी, दुम ही जय माता । सुर्व-वन्दन ध्यावत, नारद ऋषि माता ॥ ओम् ॥
 दुर्गा रूप निरञ्जनी, सुरा-सम्पत्ति-दाता । जो कोई तुमको ज्ञावत, भाँटि सिद्धि धन पाता ॥ ओम् ॥
 तुम पाताह निर्वर्तिनि, तुम ही शुभ दाता । ऊन-प्रभाव प्रकाशिते, भवनिधि की आता ॥ ओम् ॥
 जिस घर में तुम रहती, तबै सब सद्गुण आता । सब सम्भव हो जाता, मन नहीं धरता ॥ ओम् ॥
 तुम निज वन न होत, वन न कोई पाता । खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ॥ ओम् ॥
 तुम गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरदधि जलात । रतन प्रदुर्लभ तुम निज, कोई नहीं पाता ॥ ओम् ॥
 महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता । उर अनन्द समाता, पाप उतर जाता ॥ ओम् ॥
 जहाँ तक सरण तेरे पहुँचे, घर शुभ हो जाता । मैं सौम्य मैया जी शुभ भूषि चाहता ॥ ओम् ॥

AVAILABLE IN :

1406

28" x 40" (Rainbow Gold Crystal)
 (Aarti)



आहूती श्री अम्बा जी की

जय अम्बे गौरी, मेया जय श्यामा	गौरी	तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी	जय अम्बे
भाग सिन्दूर विशालत, टीको मुगमल	को	उज्जवल से दोउ नेमा, बन्द वदन नीको	जय अम्बे
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर	राज	रगत पुष्प गल भाला, कण्ठन पर साज	जय अम्बे
कोहरि वाहन राजत, खड्ग खम्बर	भारी	सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके मुख हारी	जय अम्बे
कालन कुण्डल शोभित, नारसी	धोती	कोटिक चन्द दिवाकर, राजत राम ज्योति	जय अम्बे
शुभ निशुभ विदार, महिषासुर	घाली	सुषुक्लिचन नेना निशिदिन मदयाति	जय अम्बे
चण्ड गुण्ड संहारे, शोणित बीज	हरे	मधु कंटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे	जय अम्बे
ब्रह्माणी कटाणी, तुम कमला रानी		आगम विगम वस्यानी, तुम शिव पटशनी	जय अम्बे
चोसल योगिनि मंगल पावत, नृत्य करत मेरी		बाजत ताल मृदंगा, और बाजत ढमक	जय अम्बे
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता		भक्तन की दुख हरत, मुख सम्पति करत	जय अम्बे
गुजा चार अति शोभित, उर भुदा भारी		मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर नारी	जय अम्बे
कंचन थाल विशालत, अगर कंपूर वाली		श्री गालकेतु में राजत, कोटि रत्न ज्योति	जय अम्बे
मी अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावे		कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे	जय अम्बे

AVAILABLE IN :

1408

28" x 40" (Rainbow Gold Crystal)
(Aarti)



महामृत्युञ्जय मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिं वर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

भावार्थ :-

हम भगवान् शिव की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक स्वप्न में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत् का पालन पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं। हमसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जाए, जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेल रुखी संसार के बन्धन से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस संसार रुखी बेल में पक जाने के बाद जन्म मृत्यु के बन्धनों से सदैव के लिए मुक्त हो जाएं और आपके परमों की अमृतकरा का पान करते हुए शरीर को ल्हाग कर जगत् में तीन हो जाएं।

मंत्र लाभ :-

♦ यह मंत्र जीवन प्रदान करता है। (अकाल मृत्यु, दुर्घटना इत्यादि) ♦ यह मंत्र सभी एवं विधु के काटने पर भी अपना पूरा प्रभाव रखता है।
♦ इस मंत्र का महत्वपूर्ण लाभ है कठिन एवं अस्वास्थ्य शरीर पर किजय प्राप्त करना। ♦ यह मंत्र सर बीमारों को भगवान का वडा स्वप्न है।



AVAILABLE IN :

28" x 40" (Rainbow Gold Crystal)
(Mahamritunjaya Mantra)

1410



महामृत्युञ्जय मंत्र



साधारण

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिं वर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥



इस ब्रह्मजन्म शंकर की पूजा करते हैं, जिसमें जीवन मेव है, जो प्रत्येक स्वप्न में जीवन हासिल का वादा करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का वास्तव ब्रह्म अपनी प्राप्ति से कर रहे हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जाए, जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेल रूपी शरीर के बन्धन से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस शरीर रूपी बेल में पक जाने के बाद जन्म मृत्यु के बन्धनों से राख के लिए मुक्त हो जाएँ और आपकी वारंसी की अमृतखाता का पान करते हुए परीर को त्याग कर जन्म में लीन हो जाएँ।

मंत्र लाभ :- ♦ यह मंत्र जीवन प्रदान करता है। (अकाल मृत्यु, पुर्नजन्म इत्यादि) ♦ यह मंत्र सर्व एव विष्णु के कण्ठ में पर भी अपना पूरा प्रकाश रखता है।
♦ इस मंत्र का महावाण्मंत्र लाभ है कर्पुन एव असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त करना। ♦ यह मंत्र हर बीमारी को भगवान् का बड़ा हाथ है।



AVAILABLE IN :

1411

28" x 40" (Rainbow Gold Crystal)
(Mahamritunjaya Mantra)



आरती श्री राम लला को

आरती कीजे श्रीराम लला की ॥ पूण निपुण धनुष कला की ॥ धनुष बान कर सोहत नीक ॥ शोभा कोटि मदन मद फीक ॥
सुभाष सिंहसम आप बिराज ॥ वाम भाग वैदेही राज ॥ कर जोर रिपुहन् हनुमान ॥ भरत लखन सेख सिधि मान ॥
शिव अज नारद मुन मान गाय ॥ निगम नेति कह पार न पाय ॥ नाम प्रभाव सकल जग जान ॥ शेष महेश मणेश बखान ॥
भगत कामतक पूरणकामा ॥ दया क्षमा करुणा गुन धामा ॥ सुभीतहु को कथिपति कीन्ता ॥ राज विभीषण को प्रभु दीन्ता ॥
खेल खेल मह सिंधु कथाये ॥ लोक सकल अनुपम यश छाये ॥ दुर्गम गढ़ लंका पति मारे ॥ सुर नर मुनि सबके मय टारे ॥
देवन थापि सुजस विस्तारे ॥ कोटिक दीन मलीन उधारे ॥ कपि केवट खग निशचर करे ॥ करि करुणा दुख दोष निजारे ॥
देत सदा दासन्ह को माना ॥ जगल पूज भे कथि हनुमाना ॥ आरति दीन सदा सत्कारे ॥ त्रिदुपुर होत राम जयकारे ॥
कोशल्यदि सकल महाहारी ॥ दशरथ आदि भगत प्रभु झारी ॥ सुर नर मुनि प्रभु गुन गन गाय ॥ आरति करत बहुत सुख पाय ॥
धूप दीप चन्दन नेवेदा ॥ मन दृढ़ करि नहि कवनव भेदा ॥ राम लला की आरती गाये ॥ राम कृपा अमित फल पाये ॥

AVAILABLE IN :

1415

**28" x 40" (Rainbow Gold Crystal)
(Aarti)**



आरती श्री रामचन्द्र जी की

श्रीरामचन्द्र रघुनन्दन राजवर्ध राजेन्द्र राम रघुनाथक राघवेश। राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र दासोऽमृत भवतः शरणागतोऽस्मि ॥ १ ॥
 श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मनः हरण भय भय दारुणम्। नवकंज लोचनः, कंजमुखः कर-कंजः पद-कंजोरुणम् ॥ २ ॥
 कन्दर्प अगणित अमिल छवि, नवनील-नीरद-सुन्दरम्। पटपीत मानसु तटित रुचि सुचि नैमी जनक सुत-वत्सम् ॥ ३ ॥
 भजु दीनवन्धु दिनेश दानवः दैत्यवंशः - निवन्दनम्। रघुनन्द आनन्दकंद कौशलचर्द दशरथः - नन्दनम् ॥ ४ ॥
 सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम्। आजानु भुजा शर-चाप-धर संताप-जित - खर - दूषणम् ॥ ५ ॥
 इति वदति तुलसीदास शंकरः शेषः पुनि - मनः रजनम्। मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि-खल-दल-गजनम् ॥ ६ ॥
 मन जाति राघ्यो मिलति सो वर राहज सुन्दर साँवरो। करुणा निधान सुजान शील स्नेह जानत रावरो ॥ ७ ॥
 एहि भांति असीस सुनी शिय सहित हिय हरषित अली। तुलसी भवतिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर बली ॥ ८ ॥

सोरठा- जानि गौरी अनुकूल शिय हिय हरपु न जाई कहि। मंजुल मंगल मूल वाम अंग करकन लगै ॥

AVAILABLE IN :

1417

28" x 40" (Rainbow Gold Crystal)
(Aarti)



आरती श्री कुंज बिहारी जी की

आरती कुंजबिहारी की ॥ श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ॥ (टेक) गले में बेजतीमाला, बजावे मुरलि मधुर बाला ।
 भ्रमन में कुण्डल झलवाला, चंद के आनन्द नन्दलाला ॥ श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ॥
 गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली, ललन में टाढ़े बनमाली, भमर-सी अलक,
 करतुरी तिलक, चन्द - सी झलक, ललित छवि ख्यामा प्यारी की ॥ श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ॥
 कनकमय मोर-मुकुट विलसी, देवता दरसन को तरसी, गगन सी सुमन राशि बरसी, बजे मुरचंग,
 मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग, अतुल रति गोपकुमारीकी ॥ श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ॥
 जहाँ ते प्रकट भई गंगा, सकल मल हारिणि श्रीगंगा, स्मरण ते होत मोह-भंगा, बसी शिव शीश,
 जटा के बीच, हरे अघ कीच, चरन छवि श्री बनवारी की ॥ श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ॥
 चमकती उज्ज्वल तट रेनु, बज रही वृन्दावन वेनु, चहुँ दिशि गोपि ग्वाल घेनु, हँसत मृदु मंद,
 चँदनी चंद, कटत भव-फंद, टेर सुनु दीन दुखारी की ॥ श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ॥
 आरती कुंजबिहारी की । श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ॥ श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ॥

AVAILABLE IN :

1418

28" x 40" (Rainbow Gold Crystal)
 (Aarti)



ॐ आरुपी जय जगदीश हरे ॐ

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे, भक्त जनों के सकल, क्षण में दूर करें ॥ ॐ ॥
 जो ध्याये फल पावे, दुःख बिन से मन का ॥ प्रभु ॥ सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ ॐ ॥
 मात-पिता तुम मेरे, शरण भई मैं किसकी ॥ प्रभु ॥ तुम बिन और न दूजा, आस कलें जिसकी ॥ ॐ ॥
 तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्रभु ॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ ॥
 तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥ प्रभु ॥ मैं मूलख खल कायी, कृपा करो मर्ता ॥ ॐ ॥
 तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥ प्रभु ॥ किस दिशि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ॐ ॥
 दीन बन्धु दुःख हरता, तुम रक्षक मेरे ॥ प्रभु ॥ अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
 विषय विकार मिटाओ, पाप हरा मेरा ॥ प्रभु ॥ अज्ञा भक्ति बसाओ, सन्तान की सेवा ॥ ॐ ॥
 तन, मन, धाम सब कुछ है तेरा ॥ प्रभु ॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ॐ ॥

AVAILABLE IN :

1420

**28" x 40" (Rainbow Gold Crystal)
(Aarti)**



ॐ आखरी जय जगदीश हरे ॐ

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे भक्त जन्तो के सकट, क्षण में दूर करे ॥ ॐ ॥
 जो प्यारे फल पाये, दुःख बिन से मन का ॥ प्रभु ॥ सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ ॐ ॥
 मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी ॥ प्रभु ॥ तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ॥ ॐ ॥
 तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्धामी ॥ प्रभु ॥ पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ ॥
 तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥ प्रभु ॥ मैं मुख्य खल काही, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ ॥
 तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ॥ प्रभु ॥ किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ॐ ॥
 दीन बन्धु दुःख हरता, तुम रक्षक मेरे ॥ प्रभु ॥ अपना हाथ छटाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
 विषय विकार भिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्रभु ॥ श्रद्धा नवित बढ़ाओ, रत्नन की सेवा ॥ ॐ ॥
 तन, मन, धन सब कुछ है तेरा ॥ प्रभु ॥ तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ॐ ॥

AVAILABLE IN :

1421

**28" x 40" (Rainbow Gold Crystal)
(Aarti)**

حجۃ الوداع

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَّهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَ أَيْدِيهِمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا مَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ

AVAILABLE IN :

1426

28" x 40" (Rainbow Gold Crystal)
(Muslim)